



ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 7

www.csir.res.in

जुलाई 2022

सीएसआईआर-निस्पर ने प्रौद्योगिकी तैयारी स्तर (टीआरएल)
और प्रौद्योगिकी मूल्यांकन के लिए इसके अनुप्रयोगों पर
कार्यशाला का आयोजन किया



oKkfud और औद्योगिक अनुसन्धान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली ने 22 जून 2022 को एक दिवसीय “प्रौद्योगिकी तैयारी स्तर (टीआरएल) और प्रौद्योगिकी मूल्यांकन के लिए इसके अनुप्रयोगों” पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। निस्पर द्वारा आईआईटी मद्रास, आईआईटी दिल्ली, आईआईटी मुंबई, आईआईटी रुड़की, आईआईटी धनबाद, आईआईटी जम्मू, सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून, यूएनडीपी एक्सेलेरेटर लैब्स और टीआईएफएसी के सहयोग से किया गया था। कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. रंजना अग्रवाल ने विभिन्न प्रयोगशालाओं में किए जा रहे शोध के प्रौद्योगिकी तैयारी स्तर (टीआरएल) का आकलन करने की आवश्यकता पर बल दिया। अक्सर प्रौद्योगिकी विकसित करने वालों (डेवलपर्स) और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के बीच अंतर मिलता है। उन्होंने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसन्धान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान

संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) द्वारा देश भर में विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों के टीआरएल के आकलन में किए गए प्रयासों के बारे में बताया। संस्थान ने अब तक टीआरएल 6 और उससे अधिक स्तर वाली 467 प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन तैयार किया है। प्रो. अग्रवाल ने उल्लेख किया कि भारत सरकार की पहल के कारण, हाल के दिनों में नवाचार की दिशा में नीतियां बनाने में एक आदर्श बदलाव आया है। भारत अब 100वें यूनिर्कोर्न का उदय देख रहा है और आज विश्व स्तर पर प्रत्येक 10 में से 1 यूनिर्कोर्न का उद्भव भारत में हुआ है। 16 जनवरी 2016 को स्टार्टअप इंडिया पहल के शुभारंभ के बाद से देश में 69,000 से अधिक स्टार्टअप को मान्यता मिल चुकी है जिनमें से 100 यूनिर्कोर्न श्रेणी में हैं। उन्होंने टिप्पणी की कि विज्ञान को समाज की सेवा के लिए केंद्रित होना चाहिए और इसे प्राप्त करने के लिए हमारे शोध संस्थानों में विकसित प्रौद्योगिकियों के टीआरएल का आकलन करना महत्वपूर्ण है।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसन्धान विभाग (डीएसआईआर) में सलाहकार/वैज्ञानिक-जी, प्रमुख (पेस, सीआरटीडीएच और ए2के) डॉ. सुजाता चकलनोबिस ने प्रौद्योगिकियों की तैयारी के स्तर के आकलन

की आवश्यकता के बारे में बताया। टीआरएल का उपयोग प्रौद्योगिकी के परिपक्वता स्तरों को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है। उन्होंने पी एंड जी पर एक केस स्टडी पर प्रकाश डालते हुए टीआरएल के महत्व को समझाया। डीएसआईआर द्वारा टीआरएल 6 और उससे उच्च प्रौद्योगिकियों की पहचान पर अध्ययन किया गया। इन प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण की सम्भावना है।

मुख्य अतिथि, डॉ. शेखर सी. माण्डे, पूर्व सचिव, डीएसआईआर और सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक, ने मुख्य अतिथि के रूप में जोर देकर कहा कि हमारी प्रयोगशालाएं जो भी शोध कर रही हैं, उसका टीआरएल द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए। भले ही विज्ञान और वैज्ञानिक खोजें सार्वभौमिक हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन ज्यादातर स्थानीय है। उन्होंने देश में दुग्ध पाउडर उत्पादन की सफलता को याद दिलाया। भले ही विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में टीआरएल का आकलन करने के अलग-अलग तरीके हों, लेकिन मूल बातें समान रहती हैं। अक्सर यह देखा गया है कि मौलिक विज्ञान और इंजीनियरिंग के बीच आकलन में अंतर है। अगर जनता की आकांक्षाओं को पूरा करना है तो



कार्यशाला के गणमान्य व्यक्ति (बाएं) और प्रो रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर.निस्पर, डॉ. सुजाता चकलनोबिस, वैज्ञानिक.जी, डीएसआईआर का स्वागत करते हुए



डॉ. सुजाता चकलनोबिस, वैज्ञानिक-जी, डीएसआईआर,



डॉ. शेखर सी. माण्डे, पूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर

वैज्ञानिकों और उद्योगपतियों को मिलकर काम करना चाहिए।

प्रो. प्रमोद पी. वांगीकर, केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी बॉम्बे ने “उच्च टीआरएल स्तरों के साथ अनुसंधान. विश्वविद्यालय और संस्थान इस में कैसे योगदान कर सकते हैं?” पर मुख्य भाषण दिया। अपने संबोधन में, उन्होंने सरकार और विश्वविद्यालयों तथा निजी क्षेत्र के बीच देखे गए अंतर को समझाया। उन्होंने उन कदमों के बारे में बताया जो विश्वविद्यालय और संस्थान अपने शोध में उच्च टीआरएल स्तर प्राप्त करने के लिए उठा सकते हैं। उन्होंने प्रौद्योगिकी को जोखिम से मुक्त करने की भी व्याख्या की ताकि प्रौद्योगिकियों का व्यवसायीकरण करना आसान हो और विश्वविद्यालय स्तर पर इन्हें अपनाया जा सके। इससे विश्वविद्यालयों और संस्थानों को उच्च टीएलआर स्तर के अनुसंधान में योगदान करने में सहायता मिलेगी।

उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र आयोजित किए गये। “चुनिंदा क्षेत्रों में टीआरएल स्काउटिंग के लिए रणनीतियाँ” पर पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डीएसआईआर में वैज्ञानिक-जी डॉ. सुजाता चकलनोबिस ने की।



डॉ. अंजन रे, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईपी, देहरादून ने “एडवेंचर्स इन ट्रांसलेशनल रिसर्च” पर आमंत्रित भाषण दिया। उन्होंने औद्योगिक मनोविज्ञान, संगठनात्मक व्यवहार, नैदानिक अनुसंधान, बाजार अनुसंधान, नकदी प्रवाह और अन्य आसान चुनौतियों के अध्ययन पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने छोटे स्टार्टअप्स के विचार का उल्लेख किया, जो नकदी प्रवाह की कमी के बावजूद अवधारणा को मूर्त रूप देना चाहते हैं, और जरूरी नहीं कि वे अंततोगत्वा बाजार पर ध्यान केंद्रित करें, हालांकि उनकी प्रेरणा ब्रांड निर्माण और

नेटवर्किंग पर है। डॉ. अंजन ने टीआरएल सेल्फ-ऑडिटिंग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। टीआरएल लाइनों के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रमुख प्रश्नों का उत्तर दिया जाना चाहिए और टीआरएल स्व.मूल्यांकन के लिए डेटा के साक्ष्य उपलब्ध होने चाहिए।

व्याख्यान के बाद 6 पीआईए द्वारा “शिक्षा, अनुसंधान प्रयोगशालाओं और उद्योग में भारत में विकसित टीआरएल-6 और उससे उच्च प्रौद्योगिकियों के तकनीकी-वाणिज्यिक मूल्यांकन” पर अपना अध्ययन करने के लिए कार्यप्रणाली और

कार्य योजना को साझा करने पर एक सत्र आयोजित किया गया था। आईआईटी जम्मू से डॉ. वी. राजकुमार, डॉ. बी आर बसाक, वैज्ञानिक, टीआईएफएसी, डॉ. रमेश अंदनारबम, आईआईटी रुड़की, डॉ. मंजूशा, आईआईटी दिल्ली, श्री सी श्रीपति, आईसीसीडीब्ल्यू, आईआईटी मद्रास और आईआईटी धनबाद के डॉ. शशांक बंसल ने विशिष्ट क्षेत्रों में परिवर्तित अनुसंधान और उनके सामने आने वाली चुनौतियों के लिए अपनी कार्य योजना साझा की। अध्यक्ष डॉ. सुजाता चकलनोबिस के समापन भाषण के साथ सत्र का समापन हुआ।

“सीएसआईआर-निस्पर के टीआरएल ढांचे का विकास और इसके कार्यान्वयन” पर दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रमोद पी. वांगिकर, प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे ने की। डॉ. विपन कुमार, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर और डॉ. सुजीत भट्टाचार्य, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के टीआरएल के आकलन में निस्पर द्वारा की गई पहलों को प्रस्तुत किया।

तकनीकी सत्र के बाद टीआरएल-6 और उससे उच्च प्रौद्योगिकियों के स्काउटिंग और मूल्यांकन की दिशा में दृष्टिकोण पर

एक परस्पर विचार विमर्श (इंटरैक्टिव) सत्र और पैनल चर्चा हुई।

डॉ. मृत्युंजय, महानिदेशक, आर एंड डी, कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) विश्वविद्यालय में महानिदेशक, अनुसन्धान और विकास और मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. मृत्युंजय ने पैनल चर्चा की अध्यक्षता की। कार्यशाला में वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकी विकासकर्ताओं (डेवलपर्स), उद्योग विशेषज्ञों, विद्वानों और विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों और उद्योगों के अधिकारियों ने भाग लिया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह का आयोजन

World Environment Day – Theme – Only One Earth
(5th June, 2022)

Biodiversity Conservation and Management in the Context of
Indian Himalayan Region

Organized By

CSIR – Institute of Himalayan Bioresource Technology,
Palampur, Himachal Pradesh

Dr. S. S. Samant, DSc, FNASc, FSE

M - + 91 9816316318

E-mail: dir_hbkt@csir.org; samantas2@rediffmail.com



Director, Himalayan Forest Research Institute,
Panthaghati – 171 013, Shimla, Himachal Pradesh, India



हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने 6 जून 2022 को

विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। विश्व-पर्यावरण दिवस पर्यावरण की सुरक्षा और

संरक्षण हेतु पूरे विश्व में मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5

जून को मनाया जाता है। इसे पहली बार वर्ष 1974 में मनाया गया था। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संस्थान सामाजिक, पर्यावरणीय, औद्योगिक और अकादमिक लाभ हेतु हिमालयी जैव संपदा से प्रक्रमों, उत्पादों और प्रौद्योगिकियों की खोज, नवोन्मेष, विकास एवं प्रसार के लक्ष्य के लिए सतत प्रयासरत है। संस्थान ने हिमालयी पर्यावरण के लाभों का दोहन करते हुए आजीविका और उत्पाद विकसित करने के लिए विशिष्ट उच्च मूल्यवान फसलों को प्रोत्साहित करने के लिए अनूठी/अभिनव पहल की है। हमारा संस्थान अपने शोध एवं विकास गतिविधियों के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण संरक्षण में योगदान कर रहा है। संस्थान ने खेती, जिन बैंक के माध्यम से सिनोपोडोफिलम हेक्सेंड्रम, पिक्रोराइजा कुरोआ, फ्रिटिलारिया रॉयली और ट्रिलियम गोवेनियम जैसे दुर्लभ, लुप्तप्राय

और संकटग्रस्त सहित प्रति इकाई भूमि क्षेत्र में उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने और दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त पौधों की स्थिति को बदलने के लिए उनकी कृषि प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ विविधता सुधार, औषधीय पौधों की उपलब्धता के लिए पहल की है। पिक्रोराइजा कुरोआ और फ्रिटिलारिया रॉयली के उत्कृष्ट पौधों को टिशू कल्चर तकनीक के माध्यम से बहुगुणित किया गया और संस्थान ने उनको प्राकृतिक वास में भी लगाया है।

डॉ. एस एस सामंत, निदेशक, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई), शिमला ने ^{MHkkjrh; fgeky;h {k= d lnHk ei t'o fofo/krk l ij{k.k vkj çc/ku^} विषय पर व्याख्यान दिया। अपने संबोधन में डॉ. सामंत ने भारतीय वानिकी शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद एवं इसके संस्थानों के कार्यकलापों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि भारतीय हिमालयी क्षेत्र जैवविविधता, वनस्पति और जीवों से समृद्ध है। हिमालयी

इकोसिस्टम का विकास समग्रता से ही किया जा सकता है। हिमालय की पादप संपदा अत्यन्त विशेष है तथा जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अब इस क्षेत्र में भी दिख रहा है जिससे वानस्पतिक और फसल पद्धति में परिवर्तन आया है। हिमालयी जैवसंपदा आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है अतः हमें इसके संरक्षण में अपना सक्रिय योगदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने स्थान विशिष्ट खतरे द्वारा पौधों का वर्गीकरण तथा पादपों के संरक्षण एवं प्रवर्धन हेतु फील्ड सर्वेक्षण से प्राप्त डाटा पर निर्भरता पर विशेष जोर दिया। अपने प्रस्तुतिकरण में उन्होंने हिमालय की क्षेत्रवार विशेषताओं, विविधता, संरक्षण, सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर तथ्यात्मक विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस समारोह में, संस्थान के कर्मचारियों एवं छात्रों ने बढ-चढ कर भाग लिया। कार्यक्रम का समापन सीएसआईआर-आईएचबीटी के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ अमित कुमार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ने अपना 40 वां स्थापना दिवस मनाया

^{lh, l vkbivkj} - हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश ने 02 जुलाई 2022 को अपना 40वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत में संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने मुख्य अतिथि पद्म श्री, पद्म-विभूषण एवं शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित डा. टी. रामास्वामी, पूर्व सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं डिस्टिग्विश प्रोफेसर ऑफ ऐमिनेंस, अन्नु

विश्वविद्यालय, चेन्नई का अभिनन्दन एवं स्वागत करते हुये उनका संक्षिप्त परिचय दिया।

इस अवसर पर डा. टी. रामास्वामी ने 'हिमालयी जैवमंडल के संपोषणीय जैव.आर्थिकी पथ की ओर: आईएचबीटी पथअन्वेषक के रूप में' विषय पर स्थापना दिवस संभाषण दिया। सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने इस संस्थान के नामकरण एवं उद्देश्यों के बारे में बताया

कि यह संस्थान सामाजिक, पर्यावरणीय, औद्योगिक और अकादमिक लाभ हेतु हिमालयी जैवसंपदा से प्रक्रमों, उत्पादों और प्रौद्योगिकियों की खोज, नवोन्मेष, विकास एवं प्रसार के लक्ष्य के लिए सतत प्रयासरत है। अपने संबोधन में उन्होंने आगे बताया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से देश को बहुत अधिक उम्मीद है, अतः हमारा दायित्व है कि राष्ट्र एवं विश्व की अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में प्रयास करें। जैवआर्थिकी को बढ़ावा देने में हमारी क्या

ताकत है तथा इस क्षेत्र में क्या अवसर है, के बारे में विस्तार से बताया। पिछले 40 वर्षों में समाज की सेवा में सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा किए गए योगदान को उजागर करने के अलावा, माननीय डॉ रामासामी ने संस्थान के लिए भविष्य के अनुसंधान और विकास पथ को भी चिह्नित किया। उन्होंने भारतीय हिमालय जीवमंडल के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र में उपलब्ध जैव संसाधनों के सतत उपयोग के माध्यम से तकनीकी समाधानों के आधार पर जैव अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत जनादेश को पुनःस्थापित करने का सुझाव दिया। उन्होंने सतत विकास के लिए तीन स्तंभों यानी सहने योग्य, न्यायसंगत और व्यवहार्य पर जोर दिया। उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में नवोन्मेष, तथा जैवआर्थिकी उत्थान के लिए जैव आधारित उत्पादों के मूल्यवर्धन पर बल

दिया तथा संस्थान से आह्वान किया कि वे भारतीय हिमालयी क्षेत्र की चुनौतियों को स्वीकारते हुए जैवआर्थिकी की दिशा में आगे बढ़ें। डा. रामास्वामी ने संस्थान की विभिन्न शोध गतिविधियों एवं सुविधाओं का अवलोकन भी किया। उनकी यात्रा के दौरान, सीएसआईआर-आईएचबीटी में समग्र सामाजिक लाभ के लिए विकसित विभिन्न किसानों और उद्योग केंद्रित प्रौद्योगिकियों को भी प्रदर्शित किया गया।

इससे पूर्व संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने संस्थान के वर्ष 2021-22 के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अरोमा मिशन चरण II के अन्तर्गत संस्थान ने 1398 हेक्टेयर क्षेत्र को सगंध फसलों के अंतर्गत समाहित किया और बारह राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में इसकी खेती का विस्तार किया। वर्ष के दौरान, हिमाचल प्रदेश ने 7.3 टन

तेल के उत्पादन के साथ देश में सगंध गंदे के तेल के शीर्ष उत्पादक के रूप में अपना स्थान बनाए रखा है। कुल मिलाकर, हमारे संस्थान से जुड़े किसानों द्वारा सगंध फसलों की खेती से लगभग ₹15.66 करोड़ मूल्य के सगंध तेल का उत्पादन किया गया। सीएसआईआर. प्लोरिकल्चर मिशन के अंतर्गत, पुष्प फसलों के क्षेत्र में 350 हेक्टेयर तक का विस्तार किया गया, जिससे 1004 किसान लाभान्वित हुए। संस्थान में इस वर्ष ट्यूलिप गार्डन एक मुख्य आकर्षण रहा। संस्थान के प्रयासों से भारत के कई राज्यों में 448 हेक्टेयर क्षेत्र को स्टीविया की खेती के अंतर्गत लाया गया। देश में हींग की खेती के लिए 214 स्थानों पर 4 हेक्टेयर क्षेत्र को खेती के अन्तर्गत लाते हुए 33000 पौधों की आपूर्ति की गई। हिमाचल प्रदेश



और उत्तराखंड के अलावा जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख में किसानों तक बेहतर पहुंच के लिए 519 किसानों और 53 कृषि अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। राज्य कृषि विभाग के सहयोग से प्रदेश में किसानों को 6859 किलो केसर के कंदों की आपूर्ति की गई ताकि केसर उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। संस्थान द्वारा उत्तर पूर्वी राज्यों में सेब की कम.चिलिंग किस्मों का विस्तार लगभग 117.5 एकड़ क्षेत्र में किया गया। इन प्रयासों का उल्लेख भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 25 जुलाई 2021 को 'मन की बात' कार्यक्रम में भी किया गया। एक नई पहल के अन्तर्गत, आईएचबीटी ने हिमाचल में दालचीनी की संगठित खेती की शुरुआत की।

संस्थान में सीएसआईआर-टीकेडीएल प्वाइंट ऑफ प्रेजेंस की स्थापना

की गई। जिसमें सोवा रिग्पा (तिब्बती चिकित्सा पद्धति) पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जहां इसे प्रलेखित और डिजिटाइज किया जा रहा है। सीएसआईआर उच्च तुंगता जीवविज्ञान केंद्र के क्षेत्र जीनबैंक को 40 संकटग्रस्त पौधों की प्रजातियों से समृद्ध किया गया।

इस अवसर पर डा. टी. रामास्वामी ने संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन 2021-22 तथा 'आईएचबीटी का इतिहास' का विमोचन किया। इस अवसर पर कृषि, जैव, रसायन, आहारिकी एवं खाद्य तथा पर्यावरण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध उपलब्धियों के संग्रह भी विमोचित किए गए। साथ में तुलसी की खेती एवं कई अन्य प्रकाशनों का भी विमोचन किया गया। समारोह के दौरान हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, सिक्किम सरकार

के अलावा 03 अन्य औद्योगिक इकाइयों के साथ समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए।

समारोह में स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एस. के. शर्मा, चिन्मय तपोवन ट्रस्ट की निदेशक डा. क्षमा मैत्रे, आईवीआरआई-आईजीएफआरआई, पालमपुर विज्ञान केन्द्र, कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रतिभागिता की।

इस समारोह में जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय पालमपुर व न्यूगल पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल बिद्राबन (पालमपुर) के 70 छात्रों व 4 शिक्षकों ने भाग लिया एवं प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के स्थापना दिवस में स्थानीय शैक्षणिक स्टाफ, पूर्व कर्मचारी, स्थानीय उद्यमी एवं उत्पादक एवं मीडिया के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 8वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस - 2022 का आयोजन

Hkkjr ljdkj के आयुष मंत्रालय तथा सीएसआईआर मुख्यालय, नई दिल्ली से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुसार सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में 21 जून, 2022 को 8वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह सफलतापूर्वक मनाया गया। संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित किए गए कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया द्वारा की गई। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं सहकर्मियों सहित योग विशेषज्ञ श्री पवन सिंह शेखावत, श्री अमित सहित प्रतियोगिताओं के विजेता आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक



डॉ पी सी पंचारिया ने उपस्थित सहकर्मियों एवं अतिथियों को 8वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की बधाई दी। उन्होंने संस्थान के सहकर्मियों एवं उनके परिजनों के लाभार्थ

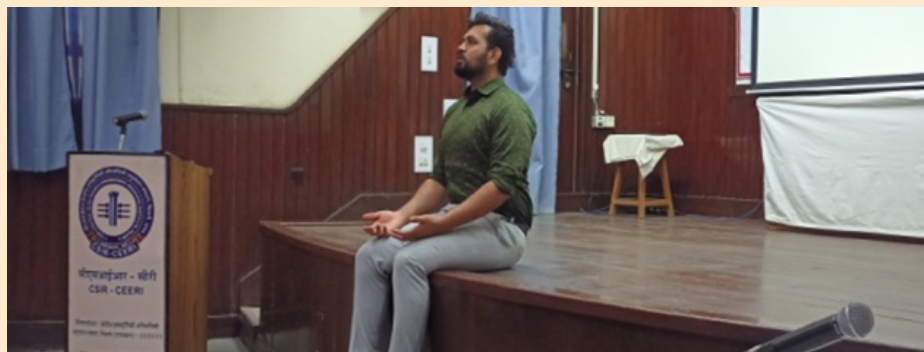
आयोजित कार्यक्रमों में सहकर्मियों को योग व प्राणायाम का अभ्यास कराने और तत्संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आमंत्रित योग विशेषज्ञों को

धन्यवाद दिया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में योग दिवस की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि योग न केवल शरीर को अपितु हमारे मन को भी स्वस्थ रखता है। उन्होंने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए आयोजन समिति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा आयोजन में सहयोग के लिए सीरी स्टाफ क्लब की भी सराहना की। इस अवसर पर डॉ पंचारिया ने योग और अध्यात्म के अंतर्संबंध पर भी प्रकाश डाला। स्वस्थ जीवन के लिए योग की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि योग संपूर्ण विश्व को भारत की अमूल्य देन है। उन्होंने सभी सहकर्मियों एवं उनके परिजनों से आह्वान किया कि वे योग को अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनाएँ।

इससे पूर्व डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 के उपलक्ष्य में संस्थान सहकर्मियों और उनके परिजनों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

डॉ पंचारिया ने संस्थान परिसर में आयोजित योग शिविर में सहकर्मियों एवं उनके परिजनों को योग शिविर में योगाभ्यास कराने के लिए श्री पवन सिंह शेखावत एवं श्री अमित सहित आमंत्रित व्याख्यान देने के लिए श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

इससे पूर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए समिति के सभी सदस्यों, सीरी स्टाफ क्लब



के पदाधिकारियों एवं अन्य सहकर्मियों को धन्यवाद दिया।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों से संबंधित वीडियो फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। निदेशक महोदय एवं अतिथियों सहित सभागार में उपस्थित सभी सहकर्मियों ने सीरी स्टाफ क्लब द्वारा तैयार की गई इस फिल्म की प्रशंसा की।

सीएसआईआर मुख्यालय से प्राप्त अनुदेशों के अनुसार इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को व्यापक रूप से मनाने के उद्देश्य से दिनांक 7-21 जून 2022 की अवधि के दौरान योग एवं स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने के लिए निदेशित किया गया था। तदनुसार संस्थान में इस अवधि के दौरान सीरी स्टाफ क्लब के सहयोग से योग एवं स्वास्थ्य पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों का आयोजन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 के उपलक्ष्य में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों का शुभारंभ दिनांक 8 जून, 2022 (शुक्रवार) को योग कार्यशाला के साथ हुआ। कार्यशाला के लिए आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षक एवं विशेषज्ञ श्री जय कृपलानी को आमंत्रित किया गया था। प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण की अध्यक्षता में आयोजित की गई कार्यशाला में संस्थान के वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी उपस्थित थे। कार्यशाला में श्री जय कृपलानी ने संस्थान के कार्मिकों को योग व प्राणायाम के लाभ बताए और कुछ सूक्ष्म व्यायाम भी कराए। कार्यशाला के प्रतिभागियों से परस्पर संवाद करते हुए उन्होंने स्वास्थ्य को व्यक्ति की पहली प्राथमिकता बताया तथा प्रत्येक व्यक्ति से अपने लिए समय निकालने और नियमित रूप से योग व प्राणायाम करने का आह्वान किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ करते

हुए प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने श्री जय कृपलानी का औपचारिक स्वागत किया तथा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का महत्व बताया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी साथी संस्थान में आयोजित इस कार्यशाला से लाभान्वित होंगे। इसके बाद वरिष्ठ अधीक्षण अभियंता श्री सुनील कुमार मित्तल, प्रमुख, इंजीनियरी सेवाएं ने श्री कृपलानी का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने श्री कृपलानी को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। कार्यशाला के अंत में श्री कुलदीप सिंह, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजन समिति ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 के उपलक्ष्य में संस्थान में 11 जून 2022 (शनिवार) को योग ब्रेक प्रैक्टिस के अंतर्गत योग शिविर का आयोजन किया गया। सीरी स्टाफ क्लब के सहयोग से आयोजित किए गए इस शिविर में सीरी विद्या मंदिर के आचार्य एवं मार्शल आर्ट विशेषज्ञ श्री पवन सिंह शेखावत ने सहकर्मियों व कॉलोनीवासियों को योगाभ्यास कराया तथा स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी। श्री शेखावत ने शिविर के शुभारंभ पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए स्वस्थ जीवन के लिए योग व प्राणायाम का महत्व बताया। उन्होंने प्राणायाम और योग की विभिन्न क्रियाओं का अभ्यास कराया और उनके लाभ भी बताए। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया, सीरी स्टाफ क्लब के पदाधिकारियों के प्रति आभार



व्यक्त किया।

संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने दिनांक 14 जून, 2022 (गुरुवार) को योग व स्वास्थ्य पर आमंत्रित व्याख्यान दिया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि विश्व को योग और प्राणायाम जैसी महत्वपूर्ण विधा भारत की ही देन है। उन्होंने बताया कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। श्री शरण ने इस अवसर पर कहा कि संस्थान, समाज और देश के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वस्थ रहना अनिवार्य है क्योंकि स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मस्तिष्क के साथ हम समाज और देश की अधिक सेवा कर सकते हैं। संस्थान के सम्मेलन कक्ष में आयोजित कार्यक्रम से संस्थान के सहकर्मी एम एस टीम्स के माध्यम से ऑनलाइन जुड़े थे। इस अवधि के दौरान संस्थान ने सहकर्मियों और उनके परिजनों के लाभार्थ विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 के उपलक्ष्य में आयोजित किए गए कार्यक्रमों की श्रृंखला में संस्थान में 18 जून, 2022 (शनिवार) को द्वितीय योग शिविर का आयोजन किया गया। योग शिविर में बिरला

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, पिलानी के योगाचार्य श्री अमित ने उपस्थित सहकर्मियों आदि को योगाभ्यास कराया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 21 जून, 2022 (शुक्रवार) को प्रातः लघु मैराथन का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान कार्मिकों के अलावा उनके परिजन भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने प्रतिभागियों को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के स्मृति चिह्न स्वरूप टोपियाँ भेंट कीं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 के उपलक्ष्य में आयोजित किए गए कार्यक्रमों का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 21 जून, 2022 को आयोजित किया गया। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन करते हुए डॉ राजेन्द्र कुमार वर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने निदेशक महोदय एवं उपस्थित अतिथियों सहित सभी सहकर्मियों व विजेताओं का औपचारिक स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। इस प्रकार संस्थान में 8वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर में योग दिवस का आयोजन

1h, l vkb'vkj-jk"Vh; foKku
lpkj और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली ने स्वस्ति (SVASTIK) टीम के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 के एक भाग के रूप में एक सप्ताह तक चलने वाले उत्सव की शुरुआत की।

इस समारोह के एक भाग के रूप में M ;kx dh oKkfud le>M पर एक संगोष्ठी का आयोजन 17 जून 2022 को आभासी मंच के माध्यम से किया गया। डॉ. चारुलता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर एवं समन्वयक, स्वस्तिक परियोजना ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में योग के इतिहास और इसे वैश्विक मंच पर लाने में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में बताया।

अपने स्वागत भाषण में प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने कहा कि योग हमें शरीर, मन और दुनिया के साथ मानवीय संबंधों को संतुलित करने में सक्षम बनाता है। योग में ध्यान, संयम और अनुशासन और दृढ़ता सभी मूल्यों पर जोर दिया जाता है। जब इसका अनुप्रयोग समुदायों और समाजों पर एक साथ किया जाता है तो यह दीर्घकालिक स्थिरता का मार्ग प्रदान करता है। उन्होंने आगे उल्लेख किया कि बड़े पैमाने पर जीनोमिक अध्ययनों ने मानव कल्याण पर ध्यान के सकारात्मक प्रभाव को मान्यता प्रदान की है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष की थीम Mekuork di fy, ;kxM की भावना को ध्यान में रखते हुए सीएसआईआर-निस्पर ने स्वस्थ जीवन जीने के लिए योग के लाभों के बारे में जनता को जागरूक



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह 2022
International Day of Yoga Celebration 2022
Theme: Yoga for Humanity
CSIR-NIScPR, New Delhi invites you to join the NIScPR SVASTIK Lecture on
Scientific Understanding of Yoga
Date: 17/06/2022, Time: 11:00 AM – 12:00 PM | Join us live at : facebook.com/niscprlive

Distinguished Speakers

Shri Subhash C Kesarwani
Director (NGS), NTIPRIT, DoT,
Govt of India

Prof Ranjana Aggarwal
Director
CSIR-NIScPR

Organising Committee:

Chairperson: Ms Charu Verma

Members:
Dr Charu Lata
Mr Kashmiri Lal
Mr R K Nagarwal
Mr Pukhraj



करने के लिए एक सप्ताह तक चलने वाले उत्सव की योजना बनाई है। प्रो. रंजना ने तत्पश्चात सीएसआईआर-निस्पर की स्वस्तिक पहल के बारे में बताया जिसका उद्देश्य लोकप्रिय चैनलों के माध्यम से भारत के पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार के साथ समाज तक पहुंचाना है।

इस समारोह का बीज वक्तव्य श्री

सुभाष केसरवानी, निदेशक (एनजीएस) एनटीआईपीआरआईटी, दूरसंचार विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में योग के अभ्यास द्वारा शरीर को विषाक्त पदार्थों से मुक्त और मन को तनाव मुक्त रखने पर जोर दिया। उन्होंने स्वस्थ आहार और नियमित व्यायाम से युक्त दिनचर्या पर चर्चा की

ताकि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में सुधार हो और बीमारियों से लड़ने के लिए इसे मजबूत किया जा सके।

व्याख्यान के बाद एक इंटरैक्टिव सत्र

का आयोजन किया गया, जहां प्रतिभागियों ने योग विशेषज्ञ श्री केसरवानी के साथ विभिन्न योग प्रथाओं के बारे में संदेह दूर किए। सुश्री चारु वर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के

साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम में सीएसआईआर- निस्पर के कर्मचारियों और छात्रों ने भाग लिया इसका फेसबुक और यूट्यूब पर सीधा प्रसारण किया गया।

ग्रामीण आजीविका के लिए सीएसआईआर की प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन

1h, 1vkbvkvj-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) नई दिल्ली, उन्नत भारत अभियान (यूबीए), और विज्ञान भारती (विभा) ने संयुक्त रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर सृजन के लिए सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए एक बड़ी पहल की है। इस संदर्भ में, सीएसआईआर-निस्पर, सीएसआईआर-आईएचबीटी, उन्नत भारत अभियान (यूबीए), और विज्ञान भारती (विभा) ने संयुक्त रूप से सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर में 29-30 जून 2022 को दो दिवसीय प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और नेटवर्किंग सम्मेलन का आयोजन किया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा विकसित ग्रामीण प्रौद्योगिकियों को उजागर और प्रदर्शित करना था ताकि किसानों की आजीविका सृजन में सहायता मिले एवं उद्यमों के अवसरों के बढ़ाकर उनकी आय में वृद्धि की जा सके।

सम्मेलन में वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, जांचकर्ताओं, क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों (आरसीआई) और यूबीए, एसएचजी, एफपीओ और ग्राम समुदाय के प्रतिभागी संस्थानों को एक मंच पर एक साथ लाया गया ताकि चिह्नित प्रौद्योगिकियों के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन/उपयोग पर



अवसरों के साथ-साथ चुनौतियों पर चर्चा की जा सके।

डॉ. संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के प्रसार और अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और समाज के बीच की खाई को पाटने के लिए सीएसआईआर-निस्पर, यूबीए और विज्ञान भारती के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने ऐसी प्रौद्योगिकियों को विकसित करने का सुझाव दिया जो समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हों, जिसके परिणामस्वरूप लोगों का कल्याण हो और हम आत्मनिर्भर भारत में योगदान कर सकें। उन्होंने विज्ञान और

प्रौद्योगिकी पहल के माध्यम से समाज की समस्याओं को हल करने के लिए शोधकर्ताओं की भी सराहना की। उन्होंने जंगली जानवरों से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त सुगंधित गेंदा जैसी सीएसआईआर-आईएचबीटी में विकसित प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला। अरोमा और फ्लोरीकल्चर मिशन की सफलता के साथ-साथ हींग और दालचीनी जैसी फसलों की शुरुआत को भी आजीविका के अवसर पैदा करने और आयात को कम करने में रेखांकित किया गया।

इससे पूर्व प्रो. विवेक कुमार, राष्ट्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान, आईआईटी

दिल्ली ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्रामीण आजीविका के उन्नयन के लिए उन्नत भारत अभियान के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए प्रौद्योगिकियों को प्रसारित करने के महत्व, सामाजिक आवश्यकताओं और समस्याओं पर विचार करते हुए शैक्षणिक पाठ्यक्रम और अनुसंधान कार्यक्रमों में संशोधन और क्षेत्रीय संसाधनों की सततता पर बल दिया। उन्होंने यूबीए द्वारा 15 विभिन्न विषय विशेषज्ञ समूहों को तैयार करने और सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए 292 परियोजनाओं को शुरू करने के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

डॉ. योगेश सुमन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने अपने संबोधन में ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए सीएसआईआर. निस्पर, यूबीए और विभा के संयुक्त प्रयासों का विवरण दिया। उन्होंने नेक्टर (NECTAR), फाउंडेशन फॉर इंटीग्रेटेड सपोर्ट एंड सॉल्यूशन (FISS), नॉर्थ ईस्टर्न डेवलपमेंट फाइनैन्स कॉरपोरेशन लिमिटेड (NEDFi), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक और भारत सरकार के अन्य मंत्रालय उत्तर पूर्व विकास मंत्रालय जैसे विभिन्न हितधारकों के साथ स्थापित किए गए संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए संसाधनों की व्यवस्था करने में किसानों और उद्यमियों के सामने आने वाली वित्त प्रबन्धन और बाजारों का पता लगाना जैसी चुनौतियों का उल्लेख किया। उन्होंने विभिन्न एजेंसियों के बीच उचित समन्वय के महत्व और ग्रामीण क्षेत्रों में सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों को सफलतापूर्वक क्रियान्वयन में लगातार प्रयासों पर प्रकाश डाला।

प्रो. ए. एम. रवानी, निदेशक, एनआईटी रायपुर ने उन्नत भारत अभियान के माध्यम से ग्रामीण आजीविका में तेजी लाने के



लिए यूबीएआरसीआई के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया। उन्होंने क्षेत्रीय समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान खोजने में शैक्षणिक संस्थानों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने एनआईटी रायपुर द्वारा किए गए बुनियादी ढांचे का समर्थन करने के लिए ओरिएंटेशन सहयोग क्लब और ग्रामीण विकास जैसे कार्यक्रमों की सफलता पर भी प्रकाश डाला।

श्री प्रवीण रामदास, राष्ट्रीय सचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली ने शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के प्रवास और फिर COVID महामारी के दौरान उनके सामने आने वाली आजीविका चुनौतियों पर चर्चा की। सीएसआईआर द्वारा बड़ी संख्या में विकसित प्रौद्योगिकियों के माध्यम से ग्रामीणों के आय सृजन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि भारत में लगभग 6 लाख गाँव हैं जिन्हें वैज्ञानिक और तकनीकी पहल के माध्यम से मुख्य धारा में लाने की आवश्यकता है। उन्होंने सीएसआईआर-निस्पर यूबीए और

विभा के संयुक्त प्रयासों के माध्यम से सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आजीविका सृजन में अब तक हुई प्रगति पर भी प्रकाश डाला।

प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने देश में ग्रामीण समुदायों के समग्र विकास के लिए उन्नत भारत अभियान और विभा के सहयोग से सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन और प्रसार को सुविधाजनक बनाने में सीएसआईआर-निस्पर के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए एजेंडा निर्धारित किया। उन्होंने इस तरह के प्रदर्शन और बैठक का आयोजन करके प्रौद्योगिकी अपनाने के मुद्दों को हल करने के महत्व पर जोर दिया।

उन्होंने सीएसआईआर की व्यापक पहुंच पर प्रकाश डाला, जिसमें 37 प्रयोगशालाएं हैं और हर क्षेत्र में समाज की सहायता के लिए लगभग सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकियों के विकास में लगी हुई है। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर-

निस्पर ने अपने संचार और नीति अनुसंधान के माध्यम से संस्थानों और समाज के बीच एक सेतु की स्थापना की है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका और आय सृजन के उद्देश्यों को प्राप्त करने और आगे लोगों के पलायन को रोकने में सहायक होंगी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. शशि धीमान, कुलपति, हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय ने बताया कि उन्नत भारत अभियान की परिकल्पना सौ वर्ष पूर्व गांवों में रहने वाले लोगों की समृद्धि के लिए 'हिंद स्वराज' में की गई थी। उन्होंने जोर दिया कि प्रौद्योगिकी समाज केंद्रित होनी चाहिए और समाज के कल्याण के लिए उपयोग की जानी चाहिए। डॉ. धीमान ने जैविक खेती के महत्व और आवश्यकता पर डाला क्योंकि सिंथेटिक उर्वरक आधारित खेती मिट्टी, पानी, वायु और मानव स्वास्थ्य को प्रदूषित कर रही है। उन्होंने पानी और मिट्टी के कुशल प्रबंधन के लिए तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने अपेक्षा की कि सभी अनुसंधान एवं विकास संस्थान, शैक्षणिक संस्थान और उद्योग समाज की समस्याओं को हल करने के लिए एक साथ आएंगे। डॉ. धीमान ने प्रौद्योगिकी विकास के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी के प्रयासों और समाज के उत्थान के लिए उनके प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण की सराहना की। बैठक के दूसरे सत्र में, सीएसआईआर-आईएचबीटी, ने विटामिन डी 2 समृद्ध शिटाके मशरूम रेडी टू ईट फ्रूट व सब्जियां, चाय, चाय आधारित वाइन, चाय कैटेकिन, टी वनेगर, टी माउथवॉश, संगंध, फूलों की खेती के साथ-साथ औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण



फसलों जैसे हींग, दालचीनी और केसर से संबंधित कृषि और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां जैसी लगभग 43 तकनीकों का प्रदर्शन किया। आयोजन के तीसरे सत्र के दौरान, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, पंजाब, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, लद्दाख, गुजरात, चंडीगढ़, असम, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, मणिपुर जैसे भारत भर के विभिन्न स्थानों के वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकी डेवलपर्स और हितधारकों के बीच बातचीत हुई। हितधारकों ने सीएसआईआर-आईएचबीटी की खाद्य प्रसंस्करण और पैकेजिंग प्रौद्योगिकियों, अरोमा मिशन और पुष्प खेती मिशन प्रौद्योगिकियों, बांस प्रौद्योगिकी, शिटाके मशरूम, चाय आधारित वाइन, हींग, आदि प्रौद्योगिकियों में गहरी रुचि दिखाई।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

सीएसआईआर-सीरी में इंडस्ट्री-कनेक्ट 34 कार्यक्रम का आयोजन

एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इंस्ट्रुमेंटेशन एवं स्ट्रैटेजिक सेक्टर (ए ई आई एस एस) थीम के अंतर्गत सामरिक एवं सामाजिक उद्देश्यों के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों पर हुई चर्चा

Lor=rk की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में देशभर में मनाए जा रहे आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 'आई-कनेक्ट 34' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इंस्ट्रुमेंटेशन एवं स्ट्रैटेजिक सेक्टर (ए ई आई एस एस) थीम के अंतर्गत सामरिक एवं सामाजिक उद्देश्यों के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों से संबंधित ऑन लाइन आयोजित किए गए कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में एसएसपीएल-डीआरडीओ, नई दिल्ली की निदेशक डॉ सीमा विनायक उपस्थित थीं। इसके अलावा संस्थान के सहकर्मी एवं अन्य प्रतिभागी ऑनलाइन आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में आई-कनेक्ट पोर्टल एवं यू-ट्यूब लिंक के माध्यम से सम्मिलित हुए।

भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अर्जित उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए देशभर में 75 उद्योग संपर्क ('आई-कनेक्ट') कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। 12 मई से आरंभ हुआ यह आई-कनेक्ट कार्यक्रम 12 अगस्त 2022 तक चलेगा। इसमें एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इंस्ट्रुमेंटेशन एवं स्ट्रैटेजिक सेक्टर (ए ई आई एस एस) थीम के अंतर्गत सामरिक



एवं सामाजिक उद्देश्यों के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों से संबंधित कार्यक्रम आई-कनेक्ट 34 सीएसआईआर-सीरी, पिलानी द्वारा आयोजित किया गया। यह संपूर्ण आई-कनेक्ट कार्यक्रम माननीय केंद्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है। भारत सरकार के इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का उद्देश्य विषयगत/फोकस क्षेत्रों में उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप उनके साथ साझेदारी स्थापित करते हुए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को गति प्रदान करना है। यह आयोजन उद्योगों तक पहुंच बढ़ाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के डीएसआईआर/सीएसआईआर, डीबीटी और डीएसटी विभागों के प्रमुख

क्रियाकलापों को एकीकृत करने का प्रयास है। प्रत्येक 'आई-कनेक्ट' इवेंट में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम शामिल किए गए हैं जैसे कि मेगा उद्योग सम्मेलन, पूर्ण वार्ता, तकनीकी प्रदर्शनियां, बी-2-बी बैठकें, गोलमेज परिचर्चा, ब्रेकआउट सत्र आदि।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने सभी अतिथियों एवं वक्ताओं का स्वागत किया और आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ पंचारिया ने आई-कनेक्ट की संकल्पना तैयार करने और इसे मूर्तरूप देने के लिए संबंधित अधिकारियों को साधुवाद दिया। उन्होंने आई-कनेक्ट संकल्पना की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन उद्योग जगत

सहित नए स्टार्ट अप्स, एमएसएमई आदि के बीच संपर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि आयोजन के उपरांत महत्वपूर्ण बिंदुओं का उचित क्रियान्वयन और उसकी मॉनीटरिंग भी बहुत जरूरी है। विशिष्ट अतिथि डॉ सीमा विनायक, निदेशक, एसएसपीएल-डीआरडीओ, नई दिल्ली ने माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज फॉर डिफेंस एप्लीकेशंस विषय पर प्लेनरी व्याख्यान दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि देश की अनुसंधान प्रयोगशालाओं और उद्योग जगत के बीच सामंजस्य अनिवार्य है। अपने व्याख्यान के माध्यम से डॉ सीमा विनायक ने वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिरक्षा क्षेत्र में देश की आत्मनिर्भरता के लिए की जा रही गतिविधियों पर प्रकाश डाला और माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों के विभिन्न अनुप्रयोगों की चर्चा की।

इस अवसर पर सीएसआईआर मुख्यालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ देवेन्द्र सिंह ने 'आई-कनेक्ट' कार्यक्रम की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए सीएसआईआर की स्थापना के उद्देश्यों की जानकारी दी। इसके अलावा कार्यक्रम के तकनीकी सत्र के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतीकरण/व्याख्यान दिए गए।

तकनीकी सत्र के अंत में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विजय चटर्जी ने 'ओवरव्यू ऑन टेक्नोलॉजीज' पर वृत्त चित्र (डॉक्यूमेंट्री) प्रस्तुत किया।

ifjppk l = % तकनीकी सत्र के उपरांत शोध एवं विकास प्रयोगशालाओं और इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए उद्योगों के बीच सहयोग व समन्वय बढ़ाने संबंधी अवसर तथा चुनौतियाँ (अपॉर्चुनिटीज एंड चॉलेंजेज फॉर एन्हान्सिंग कोलैबोरेशन अमंग आर एंड डी लैब्स एंड इन्डस्ट्रीज



फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स) विषय पर परिचर्चा सत्र के दौरान विचार विमर्श किया गया। सत्र में केंद्र एवं राजस्थान सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों सहित उद्योग जगत के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

परिचर्चा में सभी विशेषज्ञ पेनल सदस्यों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

परिचर्चा सत्र का संचालन संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक श्री प्रमोद तैवर ने किया। इससे पूर्व कार्यक्रम के समन्वयक

एवं संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रवीन्द्र मुखिया और जयपुर केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक श्री साई कृष्णा वड्डादि ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं वक्ताओं का औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने सभी अतिथियों सहित कार्यक्रम से आनलाइन जुड़े प्रतिभागियों एवं संस्थान के सहकर्मियों को कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम के अंत में डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीएसएमसीआरआई में जल शोधन व जल प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

'त्य' जीवन है और शुद्ध पेयजल के उपयोग से दैनिक जीवन की कई बीमारियों से बचा जा सकता है' इस वैज्ञानिक तर्क को ध्यान में रखकर, 28-30 जून 2022 को सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में जल शुद्धिकरण तकनीकों, भूजल से आर्सेनिक निस्तारिकरण तथा एकीकृत जल प्रबंधन पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन, गुटनिरपेक्ष और अन्य विकासशील देशों के विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्र (एनएएम एस एंड टी सेंटर), नई दिल्ली के सहयोग द्वारा भारत सरकार के आजादी के गौरवशाली 75वीं वर्षगांठ "अमृत महोत्सव" के तहत किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन पदमश्री प्रो. टी. प्रदीप (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास) के व्याख्यान 'उन्नत पदार्थों के उपयोग से वहनीय स्वच्छ जल' द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के निदेशक प्रो. कन्नन श्रीनिवासन ने कहा कि शुद्ध पेयजल कि उपलब्धता जन-जीवन के लिये अति आवश्यक हैं। भारत के विभिन्न प्रांतों के भू-जल में आर्सेनिक, फ्लोरायड एवं अन्य लवणों



की सांद्रता में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है, विकासशील देशों के उपयोग के लिये जल शुद्धिकरण की सस्ती व जन-उपयोगी तकनीकी का विकास करने की अति आवश्यकता है। कार्यशाला के समन्वयक डॉ. विनोद कुमार शाही, मुख्य वैज्ञानिक ने कहा सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई, भावनगर जल विलवणीकरण एवं शुद्धिकरण के क्षेत्र में विगत पाँच दशकों से सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। संस्थान ने इस दिशा में कई जन-उपयोगी तकनीकी का विकास किया है, जो भारतीय जन-मानस के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है, इन तकनीकों को विभिन्न औद्योगिक समूहों द्वारा उत्पादित किया जा रहा है। संस्थान

ने जल विलवणीकरण के लिये राजस्थान, गुजरात एवं भारत-पाक सीमा पर सुरक्षा बलों के लिये कई जल शुद्धिकरण संयंत्रों की स्थापना की है। विगत वर्ष अमरेली जिले के ताऊते तूफान ग्रसित क्षेत्र, महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में भीषण बाढ़ से प्रभावित लोगों को आपात स्थिति में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया। इसी से साथ-साथ औद्योगिक जल-शुद्धिकरण का एक संयंत्र नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) नोएडा में भी स्थापित किया है। हाइब्रिड मोड में आयोजित इस कार्यशाला में 15 से अधिक देशों के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया।